thearyasamaj.org

प्रकाशन की तिथि 01.3.2015

ओ३म्

एक प्रति मूल्य : रु० 4.00

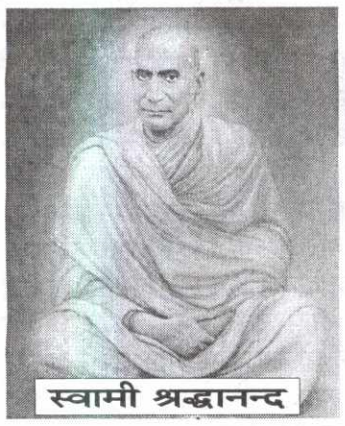

शुद्धि समाचार

सन् 1923 में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का मासिक मुखपत्र

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः । अथर्ववेद 12.1.12
भूमि मेरी माता है और मैं उस मातृभूमि का पुत्र हूँ।

वर्ष 38 अंक 03

"शुद्धि ही हिन्दू जाति का जीवन है"

वार्षिक शुल्क : 50 रुपये
आजीवन शुल्क : 300 रुपये

मार्च, 2015 विक्रम सम्वत् 2071 फाल्गुन-चैत्र

सनातन धर्मी नेता – पं. मदनमोहन मालवीय

दूरभाष : 011-23847244

परामर्शदाता : श्री हरबंस लाल कोहली ☼ श्री विजय गुप्त ☼ श्री सुरेन्द्र गुप्त ☼ प्रबन्धक : श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा

आत्मिक ज्ञान और पुण्य खरीदे नहीं जा सकते

– गंगा शरण आर्य

जिन लोगों ने आत्मिक ज्ञान और पुण्य को बेचने की दुकानें खोली हुई हैं वास्तव में उनके पास आत्मिक ज्ञान व पुण्य अर्थात् वैदिक ज्ञान और परोपकारी जीवन का अनुभव है ही नहीं। केवल "सादा जीवन उच्च विचार" वाले ज्ञानवान व पुण्यात्मा लोगों की बाह्य वेश भूषा ही शेष बची है जो उन्होंने अपना रखी है उसी को देखकर भोले-भाले लोग चढ़ावा दे देकर लुटते जा रहे हैं इसी दुःख का अनुभव करने के कारण यह लेख प्रस्तुत है:-

बहुत सारे लोग यह सोचकर भ्रमित रहते हैं कि जो सत्कार्य वे करते हैं उनका उन्हें कोई लाभ नहीं मिलता, पुण्य नहीं मिलता। दरअसल, निजी स्वार्थ के लिए किया गया कोई भी दान फलदायी नहीं होता। उदाहरण के लिए कुछ लोग यह सोचकर दान देते हैं कि पैसे फालतू पड़े हैं, काला धन है, इनकम टैक्स के झंझटों में कौन फंसे इससे तो अच्छा भगवान को चढ़ा दें। पुण्य ही मिलेगा, भगवान खुश हो जाएगें। जब इसमें स्पष्ट है कि वे एक बोझ से छुटकारा पाना चाहते हैं, इसमें लालच और चापलूसी का भी भाव है। ऐसे में दाता के मूल आंतरिक भाव के अनुसार नकारात्मक फल ही मिलेगा, पुण्य नहीं। पुण्य मिलता है करूणा में सहयोग, असहायों का सहयोग करने से और हृदय मे सर्वकल्याण जैसे सच्चे सात्विक भावों से। पर ऐसे दान बहुत कम देखने में आते हैं। दान में इस बात का जरा भी महत्व नहीं है कि दान कितना महंगा है बल्कि दान में यह महत्त्वपूर्ण है कि दान कितनी सद्भावना, करूणा, प्रेम और परोपकार की भावना से सुपात्र को दिया गया है या नहीं। ऐसे सद्भाव से दिया गया 10 रूपया भी उतना ही पुण्य देगा जितना 10 करोड़ का दान क्योंकि दोनों अवस्थाओं में आंतरिक भाव सात्विक थे और उतने ही गहरे थे। फल 10 रूपये या 10 करोड़ रूपये के अनुसार नहीं मिलेगा बल्कि फल भीतर के मूल आंतरिक भावों के अनुसार मिलेगा। हमारा अवचेतन मन ऐसे की काम करता है। वह हमेशा मूल भूत सच्चाई का साथ देता है। ये तो हमारा व्यवसायिक दिमाग हिसाब करता है कि 10 करोड़ दिए है तो ऊपर भगवान, आगे की सीट (वी.आई.पी.) तो दे ही देगा, थोड़ा खास ख्याल तो करेगा ही। अवचेतन मन में चापलूसी का भाव भी प्रबल है, बहती गंगा में हाथ धोने वाला भाव है। ऐसे भावों से क्या पुण्य मिलेगा? कभी नहीं।

तीर्थ यात्रा पर जाने वाले लोगों के मन में पुण्य संचय करने का भाव बड़ा तीव्र होता है और जितने भी तीर्थ स्थल हैं प्रायः पानी के स्रोत के पास ही होते हैं और प्राकृतिक मनोहारी स्थल भी होते हैं और वहां पाए जाने वाले मंन्दिर में किसी न किसी तपस्वी महापुरूष या काल्पनिक देवी-देवताओं का इतिहास भी सुनने को मिलता है और इसी से लोग प्रसन्न हो जाते हैं कि हमें आशीर्वाद तो मिलेगा ही, लेकिन वे तीर्थ से संबंधित सच्चे इतिहास को नहीं जानते हैं। आज कल तीर्थ से अभिप्राय (अक्सर) ऐसे भौगोलिक स्थलों से लिया जाता है जहाँ विशिष्ट मन्दिर स्थापित है तो पुराणों के अनुसार अवतारों के जन्म या लीला स्थल रहे हैं या उनके नाम से प्रसिद्ध हैं और ये विशिष्ट नदियों यथा गंगा, क्षिप्रा, गोदावरी आदि नदियों के आस-पास अवस्थित है। इसी के साथ यह धारणा भी प्रचलित है कि इन तीर्थों की यात्रा करने व इन पवित्र नदियों में स्नान करने से पाप दूर हो जाएंगे व पुण्य की प्राप्ति होगी साथ ही साथ मोक्ष का सुख भी मिलेगा। यह मान्यता अवैदिक है तथा कर्म-फल के सिद्धान्त के विरुद्ध होने से भी यह मान्य नहीं। क्योंकि पाप कभी, किसी भी स्थिति में क्षमा योग्य नहीं होता, उसका फल कभी न कभी मिलता अवश्य है। अतः तीर्थ यात्रा का केवल जीवन की नीरसता में कुछ नयापन आने से चित्त की प्रसन्नता होती है तथा जानकारियों में वृद्धि होती है नदियाँ में नहाने से शरीर की शुद्धि होती है इससे अधिक और कुछ नहीं। **ऋषियों की दृष्टि में तीर्थ वहीं है, जो दुःख सागर से पार कर दे।** माता-पिता, आचार्य, विद्वान, धार्मिक उपदेशक, वानप्रस्थी, संन्यासी जो हमें यथार्थ ज्ञान सहित सत्यमार्ग पर चलने की शिक्षा देते हैं, तीर्थ है। तपस्वी-ब्रह्मनिष्ठ, तीनों प्रकार की ऐषणाओं (पुत्रैषणा, वितैषणा, लोकैषणा) का त्याग कर देने वाले, परोपकारी महात्मा हैं वे साक्षात् तीर्थ ही हैं। इनके सत्संग और तदनुकूल आचारण से दुःख सागर से तरना सम्भव है। महर्षि दयानंद लिखते हैं कि-

"वेदादि सत्य शास्त्रों का पढ़ना-पढ़ाना, धार्मिक विद्वानों का संग, परोपकार, धर्मानुष्ठान, योगाभ्यास, निवैर, निष्कपट, सत्यभाषण, सत्कर्म करना, ब्रह्मचर्य, आचार्य, अतिथि, माता-पिता की सेवा, परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना, शान्ति, जितेन्द्रियता, सुशीलता, धर्मयुक्त पुरूषार्थ, ज्ञान-विज्ञान आदि शुभ गुण-कर्म दुःखों से तारने वाले होने से 'तीर्थ' हैं।

प्राचीन काल में ब्राह्मण, वानप्रस्थी, वैदिक विद्वान, संन्यासी लोगों के निवास स्थान शुद्ध और प्राकृतिक मनोहारी वातावरण जहाँ शुद्ध जल का स्रोत बहुत जरुरी था ऐसी जगह होते थे। वे खुद भी मूर्ति की पूजा नहीं करते थे। अध्यात्मिक ज्ञान के प्रकाण्ड पंडित होते थे। इसलिए जन साधारण गृहस्थी लोग मार्गदर्शन के लिए उनके प्रवचनों के प्यासे रहते थे, ताकि सचमुच दुःखों से तरा जा सके इसी का नाम तीर्थ यात्रा होता था अब न वहाँ सच्चे तपस्वी रहे, न वेद का ज्ञान रहा। अब चढ़ावे के अलावा वहाँ कुछ शेष बचा नहीं इसलिए आज कल तीर्थ नामक स्थलों में बैठे वेदज्ञान से कोरे पाखण्डियों के पास जाकर धन, समय, और बुद्धि भ्रष्ट करने वाले कर्मों का कोई अच्छा फल मिलने वाला नहीं। उपरोक्त कर्म करने से ईश्वर हमारे पाप कर्म सब भुला देगा। ऐसी धारणा रखकर मन में यही विचार लाता रहता है कि बस नाम ले लो ईश्वर का, किसी भी प्रकार से पूजा कर लो उसकी, देवी-देवता की खूब प्रशंसा करके उनको अपने पक्ष में बांध लो।

शुद्धि सम्मेलन का आयोजन

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के अन्तर्गत बहुत वर्षों के पश्चात् एक शुद्धि सम्मेलन का आयोजन रविवार, दिनांक 5 अप्रैल को आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली में होना निश्चित हुआ है। इस सम्मेलन के दो सत्र होंगे, पहला सत्र प्रातः 10 बजे से दोपहर 1 बजे तक, और दूसरा सत्र 2 बजे से सायं 5 बजे तक होगा एक बजे से दो बजे के बीच भोजन की व्यवस्था रहेगी। पहले सत्र में 'शुद्धि' विषय पर जो महानुभाव अपने विचार रखना चाहेंगे उन्हें 5-10 मिनट का समय दिया जायेगा, इसके लिए आप अपने नाम भेजने की कृपा करें।

दूसरे सत्र में आर्य समाज, सनातन धर्म, विश्व हिन्दू परिषद, धर्म जागरण मंच, जैन समाज, सिक्ख समाज, बाल्मीकि समाज के प्रमुख नेतागण अपने-अपने विचार रखेंगे। इस शुद्धि सम्मेलन को और अधिक सफल बनाने के लिए आप अपने सुझाव भी भेज सकते हैं।

निवेदक :

नरेन्द्र मोहन वलेचा
महामंत्री

हरबंसलाल कोहली
(कार्यकारी प्रधान)

शुद्धि समाचार में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

thearyasamaj.org

नहीं तो कभी ऐसा न हो कि नाम न लेने से, उसकी तरफ न देखने से ईश्वर मेरा काम न बिगाड़ दे, धन्धा चौपट न कर दे, ढ़ेर सारी समस्याएँ या बाधाएँ पैदा न कर दे। सच्ची तीर्थ यात्रा एक झटका है उत्तेजना है, जाग जाने का संदेश है, एक एवरेस्ट की सूचना है परन्तु 99 प्रतिशत लोग तीर्थ यात्रा से लौटकर थोड़ी देर के लिए शमशान घाट का वैराग लाकर फिर उसी बेहोशी वाले जीवन में लौट आते हैं। जैसे कोई गरमी के अन्दर ठण्डे पानी के छींटे मार आया परन्तु कुछ देर बाद फिर पसीने में लथ-पथ हो रहा है। तीर्थ यात्रा का अर्थ है, ऐसी गंगा में जाना जहाँ सदियों से संस्कार के रूप में पाले हुए अपने अंहकार, वासनाएँ, अनावश्यक महत्वाकांक्षाएं, स्वार्थ आदि सब विकार छोड़कर नए संकल्प के साथ विचारों को साफ कर उससे मुक्त होकर जागकर, रूपान्तरित होकर, गृहस्थ जीवन को सुधार इस संसार में कीचड़ में कमल के फूल की तरह खिलना और अपनी पवित्रता और सुन्दरता का लाभ संसार को देना बस यही तीर्थ का सच्चा फल है। तीर्थ यात्रा करके जागे ही नहीं, रूपान्तरित ही नहीं हुए, तो करते रहें, ऐसी हजारों तीर्थ यात्राएँ और देते रहें दिल को झूठी तसल्ली, जीते रहें भ्रम में। संसार में किसी को कोई फर्क नहीं पड़ने वाला। अब तो होश में आ ही जाओ और कर लो सच्ची तीर्थ यात्रा, कहीं दूर ज़ाकर नहीं अपने भीतर (मन मन्दिर) में जाकर। बाहर की सभी तीर्थ यात्राएँ अज्ञानवश भीतर की तीर्थ यात्रा से वंचित रहने का ठोस कारण है। अपने से और दूर जाने का सिलसिला है इसलिए सदियों से मानव झूठी तीर्थ यात्राएं करने के बाद भी वहीं का वहीं है। उसे सिर्फ यही मानसिक सन्तोष है कि उसने भले ही कितने ही पाप कर्म किए हों, लेकिन भगवान के दरबार में हाजिरी लगा कर या थोड़ा-बहुत दान देकर, मन्दिर बनाकर या मन्दिर-गुरुद्वारे में सेवा करके, माता के बड़े-बड़े जागरण कर और भण्डारे करके उसने ईश्वर को सूचित कर दिया है। अब ईश्वर इतना तो करेगा ही कि नरक से बचा लेगा। आदमी भीतर की तीर्थ यात्रा से अनभिज्ञ रहता हुआ बाहर की तीर्थ यात्राओं को इतना महत्व देता है। ऐसा नही हैं कि बाहर की तीर्थ यात्राएं गैर जरूरी है या महत्वपूर्ण नहीं हैं। बाहर की तीर्थ यात्राएं अध्यात्मिक जगत में प्रवेश कराने में सहयोग कर सकती हैं अन्तिम मंजिल या उद्देश्य तो भीतर की गंगा में डूबना है, उस पार जाना है स्वयं को तीर्थ स्थल बनाना है। तीर्थ यात्रा करना नही है स्वयं तीर्थ स्थल में रूपान्तरित हो जाना है। वरदान प्राप्ति की खुशी और अभिशाप मिलने का डर दोनों के चक्कर में फंसे हुए लोग यह सोचते हैं कि हमने यदि ईश्वर या किसी देवी देवता के प्रति कोई कर्म काण्ड नही किया तो हम उनके अभिशाप के भागीदार बन जाएँगे। और हमने उसको खुश करने के लिए कुछ कर्म काण्ड किया तो हमको कुछ उनसे वरदान तो मिलेगा ही। हो सकता हैं हमारे अमुक-2 दुःख दर्द जो हो रहे हैं वे सब मिट जायें। पण्डे और पुजारियों ने पेट भरने के लिए आम आदमी को वरदान और अभिशाप की रस्सी से बांधा हुआ है।

हे भारतीयो! पांच हजार वर्ष से सोने वाले आर्य पुत्रो! उठो! इतनी गहरी और चिरनिद्रा में तुम्हारा नाम तक बदल कर 'हिन्दू' रख दिया है। दुष्टों ने तुम्हारे पवित्र ज्ञान के स्त्रोत 'वेद' को तुम से छीन लिया है और दे दिया है तुम्हें पाषण व धातु आदि का परमेश्वर, वह भी एक नहीं, अनेक, वो भी भिन्न-भिन्न रूपों के ताकि हम एक ना हो सकें और दे दिया है तुम्हें वरदान कि अब से भगवान तुम्हें नहीं, तुम भगवान को पालोगे, नहलाओगे, वस्त्र पहनाओगे, घण्टी बजाकर सुप्त भगवान को जगाओगे, प्रातःकाल उठाओगे और बुलाओगे, सभी पाप कर्मों को गर्दन झुकाते ही साफ करवाओगे।

जिसका भय था वही जेब में आ गया है, शिवालय में बन्द हो गया है, जा कहां सकता है बाहर, बिगाड़ क्या सकता है? मुझे पूर्ण स्वतन्त्रता है, सभी कर्म-दुष्कर्म करने की और माफ क्यों नहीं करेगा, वो भगवान जो मेरे द्वारा दिया पहनावा पहने, मेरा दिया हुआ खावे, मेरे अन्न पर पला मेरे विपरीत क्या करेगा। जो मुझे अच्छा वह मेरे भगवान को भी अच्छा, मुझे शराब अच्छी तो मेरे भगवान को भी अच्छी, मुझे अनेक स्त्रियां अच्छी तो मेरे भगवान को भी अच्छी, मुझे बकरा अच्छा तो मेरे भगवान या देवी को भी बकरा अच्छा, जब मैं सभी कार्य करने में स्वतन्त्र, स्वच्छन्द तो मेरे भगवान का तो कहना की क्या वो तो सर्व स्वतन्त्र, सर्व शक्तिमान चाहे तो आज लखपति बना दे, चाहे तो बिना माता-पिता के अपना बेटा बना दे। घड़े से सीता जैसी स्त्री को बना दे, कर्ण जैसे वीर को कान से उत्पन्न कर दे, मछली के गर्भ से ऋषियों को जन्म दे दे और स्वयं भी जन्म ले ले मेरी रक्षा के लिए, क्योंकि गर्दन जो झुकाता हूं।

इस प्रकार की भ्रान्तियों में फंसाकर अंध श्रद्धालुओं के साथ-साथ लिखे-पढ़ों को भी ऐसा ही पाठ सिखाते रहना पूजाविधि के ठेकेदारों का स्वभाव बन गया है। समस्त अज्ञान से दूर होना हो और सच्चा आस्तिक बनना हो तो राम-कृष्ण की भांति उसी ईश्वरोपासना को अपनाओ जो उन्होंने स्वयं अपनाई थी। ईश्वर की साधना में आंतरिक भाव काम करते हैं बाहर से, ऊपर-ऊपर से किये गए काम या व्यवहार नहीं। अगर आप दान अहंकार-वश देते हैं कि चार लोगों में समाज में मेरी प्रतिष्ठा बढ़ेगी, लोग मुझे महादानी, महा धार्मिक समझेंगे, वाह-वाह होगी, ताली बजेंगी सम्मान मिलेगा, विशेष पद मिलेगा, तो आपका मूल भाव अहंकार एवं लालच है। यह तामसिक दान है। तब आपको दुनिया की कोई शक्ति, कोई नियम वह पुण्य नहीं दे सकता, जिसे सात्विक श्रेणी में रखा जा सके। आपके भाव के अनुसार आपको क्षणिक सुख या तृप्ति तो मिल सकती है, लेकिन भविष्य में इसका परिणाम आपकी आशा के अनुकूल नहीं होगा। क्योंकि बीज गलत है जब यदि आप दान इस भाव से दे रहे हैं कि जा ले जा तू तो निकृष्ट है, मै उत्कृष्ट हूँ तो इस दान में भी अहंकार की पुट है और नकारात्मक फल ही मिलेगा। इसलिए भारत में इस भाव से 'दक्षिणा' शब्द का उपयोग किया कि आप कृतज्ञ हो रहे है सामने वाला आपका दान सहज स्वीकार कर रहा है अगर आप दान देकर कोई अपेक्षा रखते हैं तो याद रखें आप सच्चे दान के फल से वंचित ही रहेंगे। बल्कि यह एक स्वार्थमय दान भिखारीपन है, एक मांग है, एक लालच है, एक आकांक्षा है। तब फल भी आपको, इन भीतरी भाव के अनुसार ही मिलेगा। इसका अन्तिम परिणाम उस दुःख के रूप में मिलता है जो आपकी अपेक्षा की कसौटी पर खरा नहीं उतरता है।

–डॉ. गंगाशरण आर्य,
मो. 9871644195

जीवन के पुण्य

जो ईश्वर को सर्वव्यापक मानकर प्रतिदिन एकान्त में आत्मचिंतन नहीं करता, उसके लिये शाश्वत शान्ति दुर्लभ ही नहीं असंभव है।

गलत तरीके से कमाया गया धन, आयु, विद्या, यश, बल व सन्तान पाँचों को क्षीण करता है।

जिस विचार, व्यक्ति, संस्था व स्थान से दीर्घकाल तक शारीरिक, आत्मिक, सामाजिक या राष्ट्रीय उन्नति न हो तो उसका परित्याग कर देना चाहिये।

एस.एम.एस. क्रिकैट मैच, टी.वी. सीरियल आदि में समय का अपव्यय करने की अपेक्षा महापुरुषों के जीवन चरित्र को पढ़ना लाखों गुना सार्थक होता है।

जो मनुष्य ईश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना नहीं करता वह महामूर्ख होता है।

अपनी संतान को तन, मन, धन से विद्या, धर्म, सभ्यता और उत्तम शिक्षा से युक्त करना चाहिए।

जो मनुष्य दूसरों का मांस खाकर अपना मांस बढ़ाना चाहता है उससे बढ़कर नीच और कौन होगा?

याद रखिये यदि आपका पैर फिसल जाये तो सम्भल सकते हैं, परन्तु जुबान फिसल जाये तो यह गहरा घाव कर देती है।

जब समय होता है सोचते नहीं, जब सोचते हैं समय निकल चुका होता है। उन्नति उसी की होती है, जो प्रयत्नशील है।

समय से पहले और समय पर कार्य करने वालों को समय का कभी आभाव नहीं रहता।

पाप हो, ऐसा कमाओं नहीं, क्लेश हो, ऐसा बोलो नहीं, रोग हो, ऐसा खाओ नहीं।

बदले की भावना है एक दिन की खुशी, माफ करने की भावना है हमेशा का आनन्द, हर पल की प्रसन्नता।

दिन में ऐसे कर्म करें कि रात्रि में सुख से सो सको। रात्रि में ऐसे कर्म करें कि दिन मे मुँह दिखा सके।

माता-पिता, भाई-बहन, पति-पत्नी की उपेक्षा करना प्रभु की कृपा का ठुकराना है, क्योंकि ये सब सम्बन्ध प्रभु कृपा से ही बनते हैं।

क्रोध एक अग्नि है जो दूसरों से पहले अपने को जला देती है।

जड़ पदार्थों का सदुपयोग एवं प्राणियों के साथ सद्व्यवहार ही ईश्वर की सच्ची पूजा है।

जो है उसमें सुखी रहें, जो नहीं उससे दुःखी न हों।

दुर्लभ कुछ नहीं, केवल दृढ़ संकल्प चाहिये।

बड़ों के अनुभव से लाभ उठाना ही उनका सम्मान करना है।

व्यक्ति अभाव से नहीं, अपितु दूसरों के प्रभाव से दुःखी है।

हृदय मंदिर है उसे जलाना नहीं। बाग के माली बनों, मालिक नहीं।

thearyasamaj.org

दयानन्द तो दयानन्द ही था!

सत्यपाल आर्य
एम.ए.एल.एल. बी (ऑनर्स)

भारतवर्ष में उन्नीसवीं शताब्दी जनजागरण का काल है। इस काल में उच्च से उच्च, महान से महान अनेक महामानवों ने जन्म लिया। उनमें से स्वामी दयानन्द सरस्वती का व्यक्तित्व, कर्तृत्व, नेतृत्व, देश–धर्म सेवा, वेदोद्धार, समाज सुधार संस्कार आदि अपनी महिमा से अलग ही स्थान रखते हैं।

योगीराज अरविन्द के शब्दों में – "सभी महापुरुष पर्वतशिखिरों की भान्ति अपनी छटा, अपनी आभा, अपनी सुन्दरता अलग–अलग रुपों में प्रकट करते हैं। सभी एक दूसरे से भिन्न, मनोहर, मनोरम, दर्शनीय प्रतीत होते हैं। किन्तु इन सब उत्तंग ऋंगों में सबसे उन्नत गौरीशंकर के समान है अप्रतिम, अद्‌भुत, अपूर्व महर्षि दयानन्द का बहुआयामी व्यक्तित्व। निराला, विचित्र, ब्रह्मचर्य से उद्‌दीप्त, तपस्या से कुन्दन, आर्षज्ञान से प्राज्जल, स्वर्णाभिराम, वर्णनातीत है उनका जीवन।"

ईसा की उन्नीसवीं शताब्दी में जन्म लेकर जिन जिन महापुरुषों ने भारतीय राष्ट्र, धर्म समाज, संस्कृति की अपूर्व सेवा की है उनमें दण्डी स्वामी विरजानन्द सरस्वती के परम शिष्य स्वामी दयानन्द सरस्वती का नाम अनन्यतम है।

"स्वामी दयानन्द सरस्वती (1824–83) उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में प्रारम्भ हुए भारतीय पुनर्जागरण युग के महान युग निर्माताओं में से एक हैं। वे केवल एक सुधारक मात्र ही नहीं थे जिन्होंने भारतीय समाज व धर्म सुधार का एक प्रबल आन्दोलन आरम्भ किया वरन वे एक प्रगतिवादी चिन्तक, दार्शनिक व मनीषी थे"

"स्वामी जी महाराज पहले महापुरुष थे, जो पश्चिमी देशों के मनुष्यों के भी गुरु कहलाए, जिनको अनेक पश्चिमी मनुष्य गुरु, आचार्य और धर्मपिता मानते थे।

जिस युग में स्वामी जी हुए हैं, उनसे अनेकों वर्ष पहले से आज तक ऐसा एक ही पुरुष हुआ है जो विदेशी भाषा नहीं जानता था, जिसने स्वदेश से बाहर एक पैर नहीं रखा था, जो स्वदेश के अन्न जल से पला था, जो विचारों से स्वदेशी था, जो आचारों से स्वदेशी था, भाषा और वेश में स्वदेशी था, किन्तु वीतराग और विद्वान् होने से सबका भक्ति भाजन बना हुआ था, जिसका देशी, विदेशी सभी मान सकते थे। ऊँचे से ऊँचे राजे महाराजे जिसका सम्मान करते थे, वह पुरुष महर्षि दयानन्द ही था। महर्षि को छोड़कर भारत के इस युग में एक भी पुरुष ऐसा नहीं हुआ, जिसने विदेशी भाषा न सीखी हो अथवा विदेश यात्रा न की हो और फिर भी स्वदेश में सम्मानित हुआ हो।

"स्वामी दयानन्द जी महाराज के जीवन का मुख्य कार्य धर्म प्रचार था, आर्यों के धर्म को सर्वोत्तम, सबसे पुरातन और ईश्वर प्रदत्त मानते थे। आत्मज्ञान आर्य धर्म की प्रधानता का सूचक है। आत्मज्ञान से आर्यों का पहले भी उत्कर्ष हुआ है। इस तत्व के पाठ इन्होंने सब जातियों को पढ़ाये हैं, इसमें ये सारे संसार के शिक्षक रहे हैं और अब भी हैं।"

इस आत्मज्ञान के मूल स्रोत ईश्वर प्रदत्त वेद हैं। वेद से ही इस तात्विक ज्ञान का निःसरण हुआ। इसीलिए श्री स्वामी जी की वेद में अपार भक्ति थी। वे पक्के वेदानुयायी थे। वेद विश्वास और वेद की अपौरुषेयता को स्थगित कर वे किसी से कभी भी सन्धि करने को उद्यत न थे।"

"महाराज का परमात्मदेव में परम विश्वास था। वे ईश्वर तत्व पर पूरा भरोसा रखते थे। उसी जगदीश की शान्त शरण में रहते हुए वे विपत्ति वज्रपात से भी घबराते नहीं थे। महाराज वेद विश्वास की भांति ईश्वर विश्वास के भी पक्के थे। वेदाज्ञा और एक निराकार ईश्वर भक्ति धर्म के ये दो अंग सार्वजनिक थे। इसी केन्द्र पर सारी जाजियों को लाने के लिए आजीवन सचेष्ट रहे।"

वे अनन्य प्रेम से पक्के पूजक थे। आर्यों का अतीत काल, उनको स्वर्णिम आचारों और स्वर्णिम विचारों से समावृत्त, स्वर्ण स्वरूप प्रतीत होता था। आर्यों की पुरानी सभ्यता की अवहेलना वे कदापि सहन नहीं कर सकते थे। उनका निश्चय था कि नवीन मतों ने, महन्तों ने और मठों ने पुरातन काल की महत्ता पर मिट्‌टी डाल दी है।"

"महाराज सार्वजनिक हित के लिए ही हाथ में तर्क का तीर लेकर खण्डन के भूखण्ड में उतरे थे। रोगी के फोड़े फुन्सियों का जब तक छेदन न किया जाये, उसका स्वस्थ होना दुष्कर है। खेतों में से जब तक झाड़ झंखाड़ उखाड़ कर, घास फूस निकाल कर इसका शोधन न किया जाए उसमें खेती का सुफलित होना असम्भव है। ऐसे ही किसी देश और जाति में से जब तक कुरीतियों को दूर न किया जाए और उसके आचार विचार का संसोधन न हो, तब तक उसकी उन्नति के सोपान पर पदार्पण करना महाकठिन है। सुधार का कार्य सर्वप्रिय तो नहीं, परन्तु सार्वजनिक हित से पूर्ण अवश्य हुआ करता है।" खण्डन खड़ग का अवलम्बन करते समय भी महाराज के महान हृदय में परहित पूर्ण ही रहा था।"

"स्वामी जी महाराज ने सामाजिक –सुधार में ब्रह्मचर्यावस्था पालन करना अत्यावश्यक बताया है। एक–एक दो–दो वर्ष के बालकों का विवाह करना देश के अधःपतन बताया है।

"उन्होंने वर्णश्रम व्यवस्था को गुण कर्म के अनुसार माना है। किसी जाति के जन का उत्तम तथा निकृष्ट होना जन्म और नाम से नहीं मानते थे।"

"महाराजा शूद्रों के सुधार के बड़े पक्षपाती थे। उन्हें भी सर्जनकर्त्ता की सर्वश्रेष्ठ कृति समझते थे। चतुर्थ वर्ण से घृणा करना, उसे अस्पृश्य समझना उनके मनुष्य पदवी से गिरा हुआ कर्म है। जो लोग कुत्तों को छूते हैं, बिल्लियों से खेलते हैं, भैंसों को हाथ लगाते हैं, ऊँटों को स्पर्श करते हैं, घृणित से घृणित जीव जन्तुओं को भी छू लेते हैं और अपने हाथ से पशुओं के चमड़े का बना जूता पहन व उतार लेते हैं, वे मनुष्यों को अछूत समझ दूर भागा करें, यह कितना अन्याय है, अधर्म है, महाराजा शूद्रों को वेदाधिकार देते हुए लिखते हैं, "जैसे परमात्मा ने पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु चन्द्र, सूर्य और अन्नादि सब पदार्थ सबके लिए बनाए हैं, वैसे ही वेद भी सब मनुष्यों के लिए प्रकाशित किए हैं।"

"श्री स्वामी जी ने स्त्री जाति के सुधार का भी परम कार्य किया है। शास्त्र रीति से उनको भी वेदाधिकार दिया है। महाराज स्त्री शिक्षा एवं स्त्रियों का महत्व वर्णन करते हुए लिखते हैं–

"स्त्रियों को भी ब्रह्मचर्य धारण और विद्या ग्रहण अवश्य करना चाहिए। भारत की स्त्रियों में भूषण रूपी गार्गी आदि देवियॉ शास्त्रों को पढ़कर पूरी विदुषी हुई हैं।" देखो, आर्यावर्त्त में राजपुरुषों की स्त्रियां धनुर्वेद, युद्ध विद्या अच्छे प्रकार जानती थी। यदि ऐसा न होता तो कैकेयी आदि स्त्रियां दशरथादि राजाओं के साथ संग्राम में कैसे जा सकती थीं? स्त्रियों को व्याकरण, धर्म, गणित और शिल्प विद्या अवश्य सीखनी चाहिए।"

"श्री स्वामी जी महाराज से भारतवासियों की दरिद्र दशा छिपी न थी। उन्होंने अपने विस्तृत पर्यटन में अकाल पीड़ित देशवासियों की करुणाजनक अवस्था को अपनी ऑखों से देखा था। उनके हृदयबोधक रोदन व करुण कन्दन को अपने कानों से सुना था। श्री स्वामी जी यह भी मानते और जानते थे कि भारत भूमि रत्नगर्भा है, सुजला है, सुफला है। ऊसर नहीं किन्तु उर्वरा और शस्यशालिनी है।"

"फिर भी यहाँ भूख, दुर्भिक्ष और अभाव क्यों है? इसका कारण शिल्पकला का भारी अभाव है। विदेशी वस्तुओं की भरमार से यहॉ के लाखों परिश्रमी निकम्मे व बेराजगार हो रहे हैं। उनके जीवन के अन्तिम वर्षों में उनके धर्मप्रचार और समाज सुधार आदि उदात्त उद्‌देश्यों से भारतवर्ष में शिल्पकला विस्तारिक करना भी सम्मिलित हो गया था। स्वामी जी जहाँ देशवासियों की आत्मिक भूख प्यास को वेदोपदेश द्वारा दूर करते थे, वहाँ उनकी शारीरिक क्षुत्पिपासा को उपराम करने के लिए शिल्पकला के सुदृढ़ सूत्रपात भी कर रहे थे।"

"स्वामी दयानन्द ने शिक्षा सुधार पर सबसे अधिक बल दिया है। वे जानते थे कि जब तक सर्वसाधारण में सुशिक्षा का प्रचार नहीं होता, तब तक उन्नति नहीं हो सकती। करोड़ों मनुष्यों को एक उद्‌देश्य पर लाने के लिए शिक्षा सबसे ऊँचा साधन है। वह शिक्षा भी धर्मसहित और जातीय होनी चाहिए।"

ऐसे समय में जबकि मैकाले की शिक्षा नीति की बदौलत भारत का युवक पढ़ लिखकर देश, धर्म, संस्कृति से कटता जा रहा था, स्वधर्म को हेय मानकर तिलाञ्जलि देकर ईसाईयत के जाल में फंसता जा रहा था, स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने कालजयी अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में सम्पूर्ण दूसरा समुल्लास शिक्षा नीति को समर्पित किया है। तीसरे समुल्लास सहित उनके व्याख्यानों, लेखों, वेदभाष्य आदि समस्त ग्रन्थ शिक्षा नीति से अछूते नहीं हैं।

सबके लिए समान अवसर, समान सुविधा, समान व्यवस्था की वकालत करने वाले स्वामी युग के प्रथम आचार्य थे। सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे समुल्लास में लिखते हैं–

"सबको तुल्य वस्त्र, खानपान, आसन दिए जाएँ चाहे वह राज कुमार हो वा राजकुमारी और चाहे दरिद्र की सन्तान हो"।

स्वामी दयानन्द का शिक्षा दर्शन जातिपाति, छुआछूत और अमीर गरीब के बीच की खाई की सम्भावना को ही जड़मूल से नष्ट कर देता है।"

अनिवार्य शिक्षा के विषय में स्वामी दयानन्द लिखते हैं–

"राजा को योग्य है कि वह सब कन्या और लड़कों को उक्त समय से उक्त समय तक ब्रह्मचर्य में रखकर विद्वान् कराना। जो कोई इस आज्ञा को न माने तो उसके माता–पिता को दण्ड देना, अर्थात् राजा की आज्ञा से आठ वर्ष के पश्चात् लड़का और लड़की किसी के घर में न रहने पावे किन्तु आचार्य के कुल में रहे, जब तब समावर्तन का समय न आवे तब तक विवाह न होने पावें।"

स्वामी दयानन्द ने अनायास बाल श्रम, बालविवाह, अनेक विवाह, बन्धुआवृत्ति, अशिक्षा, जाति पाति छुआछूत आदि सामाजिक बुराइयों को समाप्त करने का रास्ता दिया है। स्वामी दयानन्द सहशिक्षा के परम विरोधी थे। वे स्वयंवर विवाह के पक्षपाती थे। वर्णव्यवस्था लागू करके उन्होंने श्रम और सम्पत्ति के अधिकारों की कान्तिकारी व्यवस्था प्रदान की है।

आज आवश्यकता है समाज की सड़ी गली व्यवस्था को बदलने के लिए स्वामी दयानन्द के जीवन दर्शन पर चिन्तन और आचरण की।

thearyasamaj.org

"ममता की छाँव"

शादी के दस वर्ष के बाद भी जब वह माँ न बन सकी तो वह उदास रहने लगी। किसी के बच्चे को देखती तो उसके मन में कसक पैदा होती कि काश उसकी भी कोई औलाद होती। जिसे वह डांटती, प्यार करती। पति-पत्नी दोनों ने मेडीकल टेस्ट करवाये सबकुछ नार्मल होने के बाद भी वह संतान सुख से वंचित थी। उसका पति अकेला था। माता-पिता भाई-बहिन नहीं थे। सो आस-पास की स्त्रियाँ जब उसे ताना देती तो उसके लिए असहनीय हो जाता। उसकी पड़ोसन सुशीला के घर जब बेटा हुआ और वह खुशी-खुशी देखने पहुँची तो उसकी सास ने बच्चे का मुँह यह कहकर दिखाने से इंकार कर दिया कि बांझ स्त्री बच्चे को देखेगी तो बच्चे पर बुरा असर पड़ेगा। वह रोते-धोते वापिस आ गई। उसनें अपने पति से कहा- "क्यों न हम एक बच्चा गोद ले लें" पति ने उसे समझाया- "जब औलाद का सुख हमारी किस्मत में ही नहीं है तो किसी दूसरे के बच्चे को गोद लेकर क्या करना?" फिर पता नहीं उस बच्चे के माता-पिता कौन हैं। किसका पाप है यशोदा ने कहा- "यह आप कह रहे हैं। बच्चे तो भगवान का रूप होते हैं। यदि कोई पापी है तो वे स्त्री-पुरुष जो कोख से जन्में बेटे को अनाथालय में छोड़कर भाग गये।"

यशोदा की जिद के आगे पति रमेश को झुकना पड़ा। शहर के अनाथाश्रम में वे एक बच्चा गोद ले आये। मुहल्ले में किसी ने सराहना की उनके इस क़दम की तो किसी ने व्यंग्य किये। बच्चे के भविष्य की खातिर बच्चे को ये पता न लगे कि उसे गोद लिया गया है। बच्चे के बड़े होने पर उसके दिमाग पर इसका गलत असर न पड़े। ये सोचकर यशोदा ने अपने पति से कहा- "आप ट्रान्सफर ले लें। हम नये शहर में जाकर रहेंगे। बच्चे की खातिर ये जरुरी है" रमेश अपनी पत्नी को बहुत प्यार करते थे। फिर उन्हें यशोदा का कहना सही भी लगा सो उन्होंने अपना तबादला भोपाल करवा लिया। हांलाकि उनकी छोटी सी नौकरी मे बड़े शहर में जीना मंहगा था उनके लिए। लेकिन यशोदा और उनके बच्चे के लिए उन्होंने महानगर में रहना ही उचित समझा। नन्हा सा शिशु दो-चार दिन तो नये चेहरे तो देखकर खूब रोया। उसके बाद वह अपनी माँ के बिना एक पल भी नहीं रहता था। बच्चे की मालिश दूध पिलाना, कपड़े बदलना नहलाना, तैयार करना। चौबीसों घंटे वह बच्चे को अपने सीने से लगाकर रखती। बच्चे का नाम यशोदा ने किशन रखा। बच्चे की देखभाल में वह इतनी खो जाती कि बाकी के काम रह जाते। एक दिन रमेश ने कहा- "बच्चा क्या आया? तुम तो मुझे भूल ही गई।"

यशोदा ने कहा – "अब पहले मैं माँ हूँ। आप अलग सोने की आदत डाल लीजिये। मैं अपने बेटे को अपने से अलग नहीं कर सकती। न ये मेरे बिना सो सकता है न मुझे इसके बिना नींद आती है।" यशोदा का पूरा जीवन बच्चे के इर्द-गिर्द सिमट गया।

बच्चे का जब स्कूल में दाखिला हुआ। घर से स्कूल 5 कि.मी. दूर था। वह किशन को गोद में लेकर स्कूल जाती और स्कूल छूटने के 10 मिनिट पहले उसे लेने पहुँच जाती। ठंड हो बरसात हो भीषण गर्मी हो या उसका स्वास्थय खराब हो। वह कंधे पर किशन का बस्ता लटकाती और उसे गोद में लेकर स्कूल लेने, छोड़ने जाती। किशन की हर इच्छा हर जिद पूरी करती। कई बार ऐसे त्यौहार भी आये। जब पिता को वेतन नहीं और किशन ने नये कपड़े, खिलौने की जिद की तो यशोदा ने कभी उधार लेकर कभी घर का सामान बेचकर अपने बेटे की इच्छा पूरी की। कई बार रमेश ने समझाया – "इतना प्रेम ठीक नहीं। ज्यादा लाड़ में बच्चा बिगड़ सकता है। "यशोदा पलटकर उत्तर देती" माँ के लाड़ से कहीं बच्चे बिगड़ते है। मैं अपने बेटे को लाड़ नहीं करूंगी तो कौन करेगा।"

एक बार पिता ने बच्चे को उसकी जिद पर डांट दिया। किशन को थप्पड़ रसीद कर दिया। किशन रोने लगा। उसके रोने की आवाज से यशोदा के दिल की धड़कन बढ़ गई। वह दौड़कर आई। उसने किशन को सीने से लगाकर चुप कराते हुए अपने पति से गुस्से में कहा- "खबरदार, जो मेरे बेटे को हाथ लगया।" रमेश समझ गये कि उसकी पत्नी अब सिर्फ माँ है किशन की। उसके अलावा उसका किसी से कोई रिश्ता नहीं। सारे रिश्ते बाद में। पहले माँ-बेटे। यशोदा और किशन। दिन गुजरते रहे। रमेश रिटायर हो गये। बच्चा बड़ा हो गया। उसकी पढ़ाई पूरी हो चुकी थी। वह रोजगार की तलाश में भटक रहा था। शाम को मायूस होकर घर लौटता। माँ उसके चेहरे को देखकर उसे अपनी गोद में लिटाकर उसके बालों को सहलाकर कहती- "अभी तेरी माँ जिन्दा है और जब तक है तब तक ऐसे मुँह मत लटकाना।"

किशन कहता – "माँ वो तो ठीक है आपने अपना पूरा जीवन मेरे लिए लगा दिया। अपनी जमा पूंजी सबकुछ। अब मैं बड़ा हो गया हूँ मेरा भी कुछ फर्ज बनता है"

माँ ने उसे प्यार से झिड़कते हुए कहा-"माँ के सामने बेटा हमेशा बेटा ही रहता है। तेरी माँ तुझे और तेरी शादी के बाद अपनी बहू-बेटे सबको संभाल सकती है। बड़ी-बड़ी बातें करने लगा है। मेरे लिए अभी भी मेरा छोटा सा किशन ही है।" और किशन अपनी माँ की गोद में ही सो जाता। सारे दुखों निराशाओं से उभरने के लिए माँ की गोद से बढ़कर स्थान उसके लिए कोई दूसरा नहीं था। किशन अपने कॉलेज के मित्र के साथ बैठा था उसके मित्र की आँखों में आंसू थे। वह किशन को बता रहा था कि मेरी बेकारी पर माँ ताने देती है कि जीवन भर पाल-पोसकर बड़ा किया। पढ़ाया-लिखाया और एक नौकरी नहीं मिल रही। बेटे का फर्ज निभाने की बारी आई तो लाट साहब बेकार है। नौकरी लगेगी तभी अच्छे घर में शादी होगी। तभी तगड़ा दहेज मिलेगा। इतना बड़ा हो गया। निकम्मा घूम रहा है। तुम्हारी माँ भी यही कहती होगी"

किशन हंसा और बोला- "नहीं मेरी माँ ऐसा कुछ भी नहीं कहती । क्योंकि वह मेरी माँ है"

उसके दोस्त ने आह भरकर कहा- "काश तेरी माँ मेरी माँ होती" किशन हंसते हुए कहता – "ऐसी माँ किस्मत वालों को मिलती है"

एक दिन अचानक यशोदा की सहेली सुशीला टकरा गई उसे बाजार में। उसने इधर-उधर का हाल-चाल पूछकर कहा-" अरे यशोदा तेरा गोद लिया बेटा कहाँ है?"

किशन माँ के साथ थोड़े से पीछे खड़ा था। उसनें यह बात सुन ली। उसके दिमाग में धमाके होने लगे। माँ मेरी माँ नहीं है। माँ ने मुझे जन्म नहीं दिया। मैं गोद लिया हूँ। घर आकर उसने माँ से पूछा-" आपनें मुझसे क्यों छिपाया कि आप मेरी माँ नहीं है" "क्या मैं तुम्हारी माँ नहीं हूँ" "लेकिन आप मेरी सगी माँ नहीं है।" "बेटा, माँ सगी या सौतेली नहीं होती। माँ सिर्फ माँ होती है।" किशन अपनी माँ यशोदा के पैरो पर गिर पड़ा और रोते हुए बोला- "आपने मुझे पाल पोसकर बढ़ा किया। मुझे इतना प्यार दिया। मैं आपका ये अहसान ये कर्ज कभी नहीं चुका सकता माँ"

यशोदा की आँखों से आँसू निकल पड़े। वह रोते हुए कहने लगी। "मेरी ममता को अहसान और फर्ज का नाम देकर तुमने मुझे पराया कर दिया, बेटा" किशन उठकर चला गया। ये सोचकर कि वह कुछ बनकर अपनी पालने वाली माँ को हर सुख देगा। उसके त्याग को व्यर्थ नहीं जाने देगा। वही उसके अन्दर इस बात का दर्द भी था कि पैदा करने वालों ने उसे पैदा करके अनाथआश्रम में छोड़ दिया। वह उदास रहने लगा। यशोदा को ऐसा सदमा लगा कि उसने बिस्तर पकड़ लिया। किशन दिन-रात मेहनत करने लगा। अपने आत्मसम्मान के कारण उसने जो नौकरी नहीं की थी। उसी नौकरी के लिए वह अपनी कॉलेज की दोस्त अर्चना के पास पहुँचा। अर्चना के पिता एक बहुत बड़ी कम्पनी के मालिक थे। उसे नौकरी मिल गई। अर्चना ने पूछा "जिस नौकरी के लिए मना कर दिया था। आज ऐसी क्या मजबूरी आ पड़ी"

किशन ने कहा – "अब मुझे अपने आत्मसम्मान से ज्यादा अपनी माँ के लिए जीना है। वो माँ जिसनें मुझे पालपोसकर बड़ा किया। मेरे लिए अपने दिन-रात एक किये। मेरा भी कर्त्तव्य बनता है कि उनके लिए कुछ कर सकूँ। उन्हें सब सुख दूँ।"

किशन दिन-रात मेहनत करने लगा। वह हर माह अपनी माँ को मनीआर्डर भेजता। मनीआर्डर पाकर यशोदा रोते हुए कहती- "मेरी ममता का अहसान चुका रहा है।" जो सदमा यशोदा को लगा। वह उससे उबर न सकी। यशोदा ने बिस्तर पकड़ लिया। डॉक्टरों को दिखाया। इलाज का कोई असर नहीं हुआ। इलाज तो तन का होता है। मन का इलाज तो किशन था। जब डॉक्टर ने कहा- "यदि यही हाल रहा तो ज्यादा दिन जिन्दा नहीं रहेगी।"

रमेश सीधे अपने बेटे के पास पहुँचे और उसे डांटते हुए कहा- "जिस औरत ने तुम्हें अपनी ममता से सींचकर इतना बड़ा किया। जिस औरत के जीवन का ध्येय उसका बेटा है। तुमने उसे एक मिनिट में पराया कर दिया। उसे तुम्हारे रूपये-पैसे नहीं चाहिए। उसे अपना बेटा चाहिए अपने पास। वह तुम्हारे बिना नहीं जी पायेगी। उसकी जान तुममें बसती है। अगर अपनी माँ से जरा भी प्यार है। उसे जिन्दा देखना चाहते हो तो वापिस लौट आओ।"

किशन भी सोचने लगा वे पल, वे घड़ियाँ, वे दिन, वे रात, वे महीने, सालों। जितना उसकी स्मृति में था। क्या मैं सिर्फ इसलिए उसका बेटा नहीं क्योंकि उसने मुझे जन्म नहीं दिया। देवकी बड़ी या यशोदा। उसने मुझे कभी पराया नहीं समझा। अपना पूरा जीवन मेरे नाम कर दिया। अपनी ममता के अमृत में दिन-रात स्नान कराती रही। अपनी आँचल की छाँव में जीवन की धूप से बचाती रही। 8वीं क्लास तक तो वह माँ के साथ ही सोता रहा। उसकी एक चीख एक कराह पर माँ कैसे घबरा जाती थी। उसकी इच्छा उसकी जिद के लिए माँ ने क्या कुछ नहीं किया। अपनी घड़ी अपने गहने तक बेच दिये। उसकी पढ़ाई के लिए माँ ने अपने सोने के कंगन, अंगूठी, कान की बाली तक बेच दी। माँ ने वर्षों फटी साड़ी को सिलकर पहना लेकिन उसे जब जो कपड़े पसन्द आते। माँ खरीदकर देती। माँ की गोद जिसमें सिर रखकर वह सारी परेशानियाँ भूल जाता था। घर में आने में थोड़ी देर हो जाये तो कितनी घबरा जाती माँ। किशन को माँ की याद सताने लगी। वह तुरन्त घर की ओर चल पड़ा।

माँ की हालत देखकर वह रोने लगा। उसनें माँ के पैरों में अपना सिर टिका दिया। "माँ, मुझे माफ कर दे। यही पहला और अंतिम सत्य है कि आप मेरी माँ है और मैं आपका बेटा। मैं आपके बिना नहीं रह सकता माँ।" माँ और बेटे दोनों की आँखों से आँसुओं की धारा बहने लगी। माँ ने उसे अपने सीने से लगा लिया।

यशोदा को बिस्तर से उठते देख रमेश ने कहा- "डॉक्टर ने तुम्हें आराम करने के लिए कहा है"

यशोदा ने कहा – "मैं आराम करुंगी तो मेरे बेटे के लिए खाना कौन बनायेगा" मैं बाजार से ले आता हूं रमेश ने कहा। मेरे होते हुए मेरा बेटा बाजार का खाना खायेगा। उसे सिर्फ अपनी माँ के हाथ का खाना पसन्द आता है।

बेटे के आते ही यशोदा ठीक हो गई। पति रमेश के साथ डॉक्टर भी आश्चर्य में थे कि एकाएक मरता हुआ आदमी बिलकुल ठीक-ठाक कैसे हो गया। ठीक कैसे न हो उसे किशन रूपी संजीवनी बूटी जो मिल गई थी।

-देवेन्द्र कुमार मिश्रा
मो. 9425405022

thearyasamaj.org

"भूली विसरी विभूति" "स्वर्गीय महाशय गोविंदरामजी आर्य"

– भीम सेन कामराह

भारत विभाजन से पूर्व रियासत बहावलपुर, उच्चशरीफ में बसने वाले आकर्षित व्यक्तित्व, सुन्दर सुडौल शरीर, मननशील, मानवमात्र के कल्याण में प्रवृत, ईश्वर विश्वासी–महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त आर्य समाज के सच्चे पुरोधा, जिनका जीवन मानव कल्याण के लिए समर्पित था। ऐसी महान् विभूति के जीवन से सभी व्यक्ति प्रेरणा ले सकें, अतः उनके जीवन के संस्मरण लिखने का यह मेरा प्रयास है।

उच्चशरीफ़ में महाशय जी का वस्त्र का व्यापार शिखर पर था। कार्य व्यापार का अधिक दबाव होने के बाद भी उनका अधिकांश समय सामाजिक कार्यों में व्यतीत होता था। अर्धरात्रि में यदि उच्चशरीफ़ के किसी सज्जन को कोई कष्ट होता था तो समय का ध्यान न करते हुए उसकी समस्या का हल करना उनके जीवन का लक्ष्य था, व्यापार का सारा कार्य उनके दो बेटों श्री कृष्णदेव आर्य तथा श्री बल्देव राज कामराह ने संभाला हुआ था जिनका आज क्रमशः "मैसर्ज गोविंदराम कृष्णदेव" के नाम से शादीपुर में वस्त्रालय तथा 'न्यू स्टेट एकेडमी सीनियर सैकेन्ड्री स्कूल" नाम से सरस्वती विहार में स्थित है शिक्षण संस्थान, जो उच्च शिखर पर होने के साथ साथ श्री कामराह जी शिक्षा के माध्यम से सुसंस्कृत विचारों के प्रचार व प्रसार में प्रवृत हैं।

उच्चशरीफ़ को फलना फूलना था, भविष्य उज्ज्वल दृष्टिगोचर हो रहा था। भारत विभाजन ने यह सपना चूर चूर कर दिया। भारत देश के विभाजन समझौते के अनुसार हमें नवनिर्मित पाकिस्तान, जो हमारी जन्मभूमि थी उसे छोड़कर जाना तय था क्योंकि बटवारा हिंदू–मुस्लिम सम्प्रदाय के आधार पर हुआ था परन्तु इतना बड़ा कार्य व्यापार और सम्पत्ति को छोड़कर चले आने के पीछे एक उमंग, भविष्य के गर्भ में छिपी हुई आशा कि इस नवनिर्मित पाकिस्तान को छोड़कर महान भारत, जो ऋषियों की भूमि पावन पवित्र धरातल, स्वर्ग की भूमि पर हम जा रहे है। इसी विश्वास से सभी के हृदय पर किसी प्रकार का दबाव नहीं रहा। अन्यथा इन परिस्थितिओं में कितनों की हृदय गति रूक जाती है।

उस समय हमारा देश पराधीन था किसी भी नगरपालिका के चुनाव ना होकर भारत सरकार द्वारा प्रशासन के प्रबन्धन हेतु सभी सदस्य नियुक्त किये जाते थे अतः इस प्रकार की नियुक्ति के लिए सम्भ्रान्त व्यक्तित्व की खोज की जाती थी। इस संदर्भ में ब्रिटिश सरकार ने अपने एक अधिकारी को कुछ नामों का चयन करने की प्रतिक्रिया स्परूप उच्चशरीफ़ भेजा गया। खोज करते हुए, सर्वप्रथम वह सज्जन, महाशय गोबिन्द राम जी की दुकान पर पहुँचा। उनसे वार्ता करने पश्चात् कुछ नामों का सुझाव मांगा तो महाशय जी ने चार पाँच नाम गिना दिए। उस अधिकारी ने विस्मय से पूछा कि आप ने अपना नाम तो दिया ही नहीं। इस बात का उस चयनकर्ता के मन पर इस निर्लेप व्यक्तित्व का इतना प्रभाव हुआ कि इस पद पर नियुक्ति के लिए महाशय जी के नाम की सहमति अपने कार्यालय को भेज दी। अतः इस प्रकार महाशय गोविंदराम जी को ही नगरपालिका के इस उच्च पद पर नियुक्त किया गया। सम्भवतः यह कमिश्नर का पद था।

स्त्री जाति की शिक्षा के प्रति सजग रहते हुए महाशय जी के प्रयासों से उच्चशरीफ़ में आर्य कन्या पाठशाला की स्थापना की गई। इनकी धर्मपत्नी स्व. श्रीमती भानुमति जी को कार्यभार सौंपते हुए प्रधाना के पद पर उन्हें आसीन किया गया।

मुस्लिम बहुल प्रान्त होने के कारण वहाँ शिक्षा पद्धति का माध्यम उर्दूभाषा थी। मदरसों में ही पठन पाठन का कार्य होता था। अतः अपनी संस्कृति को स्थिर रखने हेतु आर्य समाज मन्दिर में हिन्दी के आधार पर बच्चों को प्राथामिक पाठशाला में धर्मशिक्षा और वैदिक संस्कृति का बोध कराने की व्यवस्था थी। आर्य समाज के सभी पर्व बड़ी धूमधाम से तथा सच्चे सौहार्द्य और परस्पर प्रेम से शोभायुक्त वातावरण में संपन्न होते थे। लोहड़ी के यज्ञ के लिए एकत्रित की जाने वाली संमिधाएँ तथा अन्य सामग्री, दिवाली आदि त्योहारों का मनाया जाना, आर्यसमाज के वार्षिकोत्सवों की शोभा, पूरे भारत से विद्वान जन सन्यासी एवं उपदेशकों का एकत्रीकरण होना और उन सब के ठहरने तथा खान–पान की सुविधा सुव्यवस्था एवं मान सम्मान द्वारा विदाई आदि उक्त सभी शोभायुक्त कार्य महाशय गोविंदराम जी की सच्ची लगन–परिश्रम और बड़ी सूझ–बूझ से किए जाने के फलस्वरूप सफल हो पाते थे। उन सभी कार्यों में आर्य समाज के सदस्यों की भागीदारी सदैव रहती थी।

"सर्वे भवन्तु सुखिनाः" को मूर्तरूप देने वाले तथा इसे क्रियात्मक रूप से अपने जीवन में अपनाने वाले थे महाशय गोविंदराम जी। तत्कालीन समय में घटित घटनाओं से अछूते नहीं थे। दूसरों के दुःख को अपना दुख समझकर उसका निदान ढूढँने में लग जाना ही उनका स्वभाव था। महाशय सोमदेव जी आर्य एक व्यापारी होने के नाते उधार लेन देन में एक मुस्लिम भाई से उनका झगड़ा हो गया, उधार ली हुई रकम न लौटानी पड़े, इस विद्वेष से अपनी संस्था में श्री सोमदेव जी आर्य के विरुद्ध झूठी शिकायत दर्ज करा दी कि उक्त साहबान ने हमारे गुलाम रसूल की तुलना एक हुक्के से की है संभवतः यह शब्द थे। "हुक्का हुकुम खुदा का नाड़ी नाम रसूल" इस प्रकार की शिकायत ने भंयकर रूप ले लिया एक समय में ऐसा लगने लगा कि श्री सोमदेव आर्य के विरूद्ध सज़ा–ए–मौत का फतवा दिया जा सकता है। महाशय गोविंदराम जी ने इनके जीवन की सुरक्षा में कितना समय दिया। कितना धन व्यय किया। स्वयं के पास धन का अभाव होने पर इस कार्य पर होने वाले व्यय के लिए संपन्न व्यक्ति महाशय कृपा राम जी (खैरपुर वाले) से पैसा उधार लेकर लाहौर गए। वहाँ से देहली में दीवान हाल आर्य समाज में श्री लोकनाथ जी वानप्रस्थी, जो उस समय हिन्दू महासभा से जुड़े हुए थे। हिन्दू महासभा का उस समय प्रभुत्व अधिक था, वानप्रस्थी जी के सहयोग से गवर्नर–क्राफटन जो उस समय शिमला में थे, से संपर्क करके इस सारेकाण्ड की जांच सी.बी.आई. से कराने की अनुमति ले ली। यह अनुमति लेना कोई आसान काम नहीं था। सी.बी. आई. की गहन छानबीन के बाद शिकायतकर्ता ने सत्यरूप में स्वीकार किया कि आपसी लेन देन के कारण यह मामला यहाँ तक पहुँचा है।

इस प्रकार महाशय सोमदेव जी आर्य निर्दोष प्रमाणित होने के साथ सम्मानपूर्वक जेल से रिहा किए गए। महाशय सोमदेव जी आर्य भारत विभाजन से पूर्व जुलाई 1947 में देहली आकर बस गए उन्होंने अपने व्यापार को सुचारू रूप से चलाकर M/s New Life dry cleaners के नाम से सब्जी मंड़ी घंटाकर मेन बाजार में संस्थान स्थापित किया और अपना प्रभाव इस क्षेत्र में इतना अधिक बढ़ा लिया कि 1967 में दिल्ली की प्रथम "दिल्ली महानगर परिषद्" जिसके मुख्य कार्यकारी पार्षद श्री विजय कुमार मल्होत्रा थे। आर्यपुरा से जनसंघ के टिकट पर पार्षद चुने गए। आर्य जी की प्रतिष्ठा–ख्याति प्राप्त करने के पीछे महाशय गोविंदराम जी का हाथ ही था।

–शेष अगले अंक में....

2696, शादीपुर मैन बाजार,
वेस्ट पटेल नगर,
नई दिल्ली

thearyasamaj.org

" नहीं, नहीं, नहीं "

–देवेन्द्र कुमार मिश्रा
मो. 9425405022

मैंने पूछा प्रभु से
क्या मंदिर चाहिए वही
जहाँ पहले था कभी
जहाँ मस्जिद है अभी
प्रभु ने कहा मूर्ख
मंदिर हो या मस्जिद
सब मेरे हैं तभी
प्यार से रहेंगे
मनुष्य सभी
हम हैं वही
प्यार नहीं है तो
राम–रहीम कुछ भी नहीं
नहीं नहीं–नहीं.....।
मैंने पूछा–फिर भक्तों के
झगड़े का क्या?
प्रभु बोले–धर्म को
राजनीति से मिलाकर
कभी धर्म बचा है कहीं
न कुरान है न पुरान है।
न श्रद्धा है भक्ति है
बस व्यर्थ की जिद है हर कहीं
अल्ला कहो या राम
हम ही हैं हर कहीं
कुछ और बना उस जमीं
हमें कुछ नहीं चाहिए।
नहीं नहीं, नहीं, नहीं....
तो फिर क्या करें?
हिन्दू–मुसलमान
अल्लाह बोले–
"तुम्हारे बाप के नौकर हम नहीं
लड़ो–मरो, भाड़ में जाओ कहीं
हम तो उसके है जो ईमान, प्रेम से
सिर झुकाये या उठाये
हर कहीं
वहीं मन्दिर वही मस्जिद
बाकी सब शैतानों की ठेकेदारी
कर रहे हैं अभी
हमनें किसी को ठेका नहीं दिया कभी
भला होगा भारत का स्कूल,
अस्पताल बनवा दो वहीं
हमें नहीं चाहिए मंदिर–मस्जिद
नहीं नहीं नहीं नहीं.....
तुम्हारी औकात नहीं कि
हमे दो कुछ।
हम देते हैं सभी को सभी।
हमें नहीं चाहिए तुमसे कुछ
नहीं, नहीं, नहीं.....

प्रेरक वचन

गौ आदि पशु का नाश होने से राजा और प्रजा का भी नाश हो जाता है, क्योंकि जब पशु न्यून हो जाते हैं तब दूध आदि पदार्थ और खेती आदि कार्यों की कमी होती है...
–महर्षि दयानन्द सरस्वती

मेरा सारा प्रयत्न गौवध बन्द कराने के लिए है, जो गाय को बचाने के लिए प्राण होम देने को तैयार नहीं वह हिन्दू नहीं...
–महात्मा गाँधी नवजीवन

मेरे विचार के अनुसार गौरक्षा का सवाल स्वराज्य के प्रश्न से छोटा नहीं, कई बातों में इसे स्वराज्य के सवाल से भी बडा मानता हूँ, मेर नजदीक गौवध और मनुष्यवध एक ही आते हैं... – महात्मा गाँधी

स्वराज्य मिलते ही कलम की एक से एक नोक से एक मिनट में ही गौहत्या बन्द हो जाएगी....
–लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

सच पुछो तो गाय समृद्धि की माता है, प्राचीनकाल के हिन्दू दूध और मक्खन का अधिक प्रयोग करते थे इसीलिए वे बहुत शक्तिशाली थे उनकी बुद्धि बहुत बडी तीक्ष्ण थीं ...
– डॉ. वेकफील्ड

गौरक्षा इस देश के नर और नारी सबके लिए वड़ा भारी कर्त्तव्य हैं दूध, घी पर ही भारत का जीवन निर्भर है जबसे गाय– बैल बड़ी निष्ठुरता से मारे जाने लगे हैं तबसे हमें चिन्ता हुई है कि हमारे बच्चे कैसे जीएंगे...
–पंजाब केसरी लाला लाजपतराय

गाय हमें घी और दूध जैसी लाभदायक वस्तुएँ देती हैं इसके बछड़े हमारी खेती करते हैं.. यदि हम इसको वध होने से बचाएंगे तो हिन्दूओं पर कोई उपकार नहीं होगा.
–ख्वाजा हसननिजामी

किसी और जानवर की कुर्बानी करना महजब इस्लाम के विरुद्ध नहीं परन्तु गाय की कुर्बानी ना दे यह मैं मुसलमान भाइयों से अपील करता हूँ कि जहाँ तक हो सके ईद के दिन किसी और जानवर की कुर्बानी करें... हकीम अजमल खाँ

–संकलन–रौनक कुमार शास्त्री

गीता नहीं, वेद हो राष्ट्रीय ग्रंथ !

अदालतों में कसमें खायी जाने वाली गीता ही भारत की क्या प्राचीनतम सर्व विद्याओं की सर्व श्रेष्ठ पुस्तक है? क्या गीता में ही राष्ट्र भक्ति के एवं पृथ्वी सूक्त हैं? नहीं, तो फिर क्यों वेद को छोड़ कर इसे ही इतना गौरवान्वित किया जा रहा है? 'जय' नाम के बाद 'भारत' फिर 'यही कहलाया 'महाभारत' के ही प्रक्षिप्तांशों में एक अध्याय का नाम है– श्रीमद् भगवत् गीता। इसमें सर्व प्रथम 70 श्लोक थे, फिर 745 श्लोक हुए, अब 700 श्लोक हैं। इसके अनेक श्लोक पुनरुक्ति दोष, अप्रासंगिक एवं अविश्वसनीय हैं!

जब दोनों तरफ से युद्धारंभ का शंख बज चुका हो, तब लाखों चमकते गदा–तीर–तलवारों को अचानक स्वतः तीन घंटों तक चुपचाप रूके रहना–किसी साहित्याख्यान में ही संभव हो सकता है, रणभूमि में नहीं।

छोटी–सी पुस्तक में मिली–जुली इसमें अनेक अच्छी बातें भी हैं, जिससे प्रभावित होकर शंकराचार्य, दयानंद, विवेकानंद, गांधी, तिलकादि इसका उपयोग करते हुए भी इसकी मौलिकता व ऐतिहासिकता पर एकमत नहीं रहे।

डॉ. श्रीराम आर्य की पुस्तक 'गीता–विवेचन' के अनुसार यह गीता पाँच हजार वर्ष पूर्व के महर्षि वेदव्यास रचित नहीं है। इसकी रचना बौद्धों और जैनियों के जमात में बहते जा रहे सनातनियों को रोकने हेतु मात्र ढ़ाई हजार वर्ष पूर्व किसी कुशल कवि द्वारा की गयी है। बुद्ध और जैन तीर्थंकरों का नाम लिये बिना ही तुलनात्मक एवं सांकेतिक भावों में महाभारत के नायक योगेश्वर श्री कृष्ण को इसलिये सर्वपूज्य सर्वश्रेष्ठ परमेश्वर बताने का सफल प्रयास किया गया है, ताकि इनके मुख से बल पूर्वक कहे, गये इन संदेशों को मानने से कोई इंकार न करें।

'सर्व धर्मान् परित्यज्य माम् एकं शरणं व्रज।' अर्थात् "तुम जैन, बौद्ध, शैव, शाक्त, बाममार्गादि सभी धर्मों को छोड़ कर बेखौफ मेरे मुख्य सनातन–पथ में लौट आओ। भ्रमवश अधर्मी या विधर्मी बने रहने के सभी पापों से मैं छुड़ा दूंगा। स्वयं पूर्णब्रह्म परमात्मा होकर मैं गारंटी के साथ ये बारंबार कह रहा हूँ।"

बौद्धों, जैनियों व तत्कालीन कुछ सनातनियों को भी आकृष्ट करने हेतु गीता के चतुर रचनाकार ने अनेक अवैदिक बातें तो कही ही, बौद्धों को खुश करने हेतु सीधे–सीधे वेद और यज्ञ की भी निंदा कर दी– देखें, दूसरा अध्याय के 42–46 एवं 53वाँ श्लोक। आठवाँ के 28 नौवां के 21, दसवाँ के 22, ग्यारहवाँ के 48वाँ श्लोक।

मनु जी कहते हैं– जो वेद को नकारे, वही नास्तिक है। गीता और गीता माहात्म्य में लिखा है कि "वेदादि सभी शास्त्रों को छोड़ कर इसी को पढ़ने में सारा पुण्य मिल जायेगा, क्योंकि यह सीधे विष्णु के मुख से निकली हुई है, जबकि वेद की उत्पत्ति विष्णु की नाभि से जन्मे ब्रह्म के एक बटा चार मुखों से हुई है।" और सचमुच गीता के जन्मते ही वेद पठन लुप्त होने लगा। जब तो ये दशा हो गयी है कि वेद जैसा महान् अतुल्य अपौरुषेय ग्रंथ के जीवित रहते हुए भी ऐसी गीता को राष्ट्रीय ग्रंथ बताना, वेद को जीते जी मार देने जैसा होगा। जबकि डॉ. संपूर्णानंद ने लिखा है– "वेद के जीवित रहने पर गीता जैसी अनेकों पुस्तकें रची जा सकती हैं, किंतु वेदास्त (वेदज्ञान का लोप) हो जाने पर सैकड़ों तरह के गीता को मिलाकर भी वेद पुनः नहीं रचा जा सकता।"

–पं. आर्य प्रहलाद गिरि, निंगा,
आसनसोल (पं.बं.) मो.
09973513236O

"वैदिक राष्ट्रीय ऋचा (मराठी भाषा) मे प्रकाशन"

दि. 15.1.2015 मकर संक्रान्ति उत्सवपर श्रीकृष्णमंदिर पैठण रोड औरंगाबाद के महानुभाव आश्रम में आश्रम की अध्यक्षा पूज्य महन्ता सुभद्रा अत्या के करकमलो द्वारा पू. संतोषमुनि कपाटे के उपस्थिति में प्रो. कृष्ण वल्लभ पालिवाल द्वारा लिखित वैदिक राष्ट्रीय ऋचा के हिन्दी भाष्य ग्रन्थ का मराठी भाषा में पं. दयाराम राजाराम बसैये (बंधु) ने अनुवाद किया है जो मंत्री आर्यसमाज तथा उपप्रधान महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा है इन्होंने अपनी बड़ी भाभीजी स्व. मथुराबाई शालिग्राम बसैये जी की सुविज्ञ पत्नी थे। उनके प्रथम पुण्य स्मरण में यह समर्पित किया है। इस कार्यक्रम मे ॲड. जोगेन्द्रसिंह चौहान (कोषाध्यक्ष आर्यसमाज) प्रधान जुगलकिशोर जी दायमा विश्व हिन्दू परिषद विभाग सहमंत्री ॲड. काशिनाथ डापके अनुवादक दयाराम रा. बसैये, ओमप्रकाश राजाराम बसैये, जगन्नाथ राजाराम बसैये, सौ. रेखा एवं अभिजित काकड़े, जयवर काकडे की उपस्थिति में प्रकाशन समारंभ संपन्न हुवा ।

thearyasamaj.org

आधुनिक इतिहास में शुद्धि समर्थक राष्ट्र नेताओं के नाम

स्वामी दयानन्द– सर्वप्रथम देहरादून में एक मुसलमान को शुद्ध कर उनका अलखधारी नाम रख कर आधुनिक भारत में सदियों से बंद घर वापसी के द्वार को खोला।

स्वामी श्रद्धानन्द – लाखों मलकाने राजपूतों जो नौमुस्लिम कहलाते थे उन्हें शुद्ध किया और व्यवस्थित रूप में सकल हिन्दू समाज को संगठित करने का उद्घोष किया। शुद्धि चक्र को सार्थक रूप से अखिल भारतीय स्तर पर चलाया एवं अपना बलिदान भी दिया।

पंडित लेखराम– सिंध से लेकर सम्पूर्ण पंजाब में जहाँ भी कोई हिन्दी मुसलमान या ईसाई बनता आप उसे शुद्ध करने निकल पडते। आपने शुद्धि रण में बलिदान दिया परन्तु अपना मिशन न छोड़ा।

लाला लाजपत राय – उत्तराखंड मं आपदा काल में ईसाई मिशनरियों द्वारा अनाथ हिन्दू बच्चों को ईसाई बनाने से बचाया एवं सरकारी कमीशन से यह नियम बनवाया।

पंड़ित देवप्रकाश – मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ के आदिवासी बहुल इलाके में ईसाई मिशनरी द्वारा ईसाई बनाये गए लाखों आदिवासी हिन्दूओं को शुद्ध किया।

लाला गंगाराम– स्यालकोट जिले में रहने वाले मेघ जाति के लोगों को शुद्ध कर उन्हें हिन्दू धर्म में शामिल किया।

मास्टर आत्माराम अमृतसरी– गुजरात में रहने वाले महार जाति के लोगों को जिन्हें धोखे से ईसाई बनाया गया था शुद्ध किया। डॉ. अम्बेडकर को बरोड़ा नरेश सयाजी राव गायकवाड़ से छात्रवृति दिलाकर विदेश भेजने वाले आप ही थे।

स्वामी धर्मानंद (पंडित धर्मदेव विद्यामार्तंड)– मंगलोर, केरल क्षेत्र में जिन्हें धोखे से ईसाई बनाया गया था शुद्ध किया।

वीर सावरकर– रत्नागिरी जिले में दलितोद्धार करवाते समय जिन्हें धोखे से ईसाई बनाया गया था शुद्ध किया।

महात्मा आनंद स्वामी – केरल के मोपला में हुए दंगों में जिन्हें जोर जबरदस्ती से मुसलमान बनाया गया था शुद्ध किया।

ऋषिदेव जी – केरल के मोपला में हुए दंगों में जिन्हें जोर जबरदस्ती से मुसलमान बनाया गया था शुद्ध किया।

काहन चंद वर्मा लाहौर वाले – आपने कोलकाता से लेकर मद्रास प्रान्त में अनेक शुद्धियाँ की। कोलकाता की शुद्धि एक ब्राह्मण युवक की गई थी जो ईसाई बन गया था। आपकी इस शुद्धि पर बधाई देने वालो में प्रमुख नाम स्वामी विवेकानंद जी का था जो अपनी अस्वस्था के कारण वहां उपस्थित न हो सके मगर पत्र लिखकर शुद्धि पर प्रसन्नता जाहिर की थी। (नोट –यह पत्र मेरे पास है)

यह छोटी सी सूची है। शुद्धि कार्य के लिए तन–मन–धन से सहयोग करने वाले हजारों ऐसे नाम इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में लिखित है। आज हमारे बिछुड़े भाइयों को फिर से वापिस घर लाने अत्यंत आवश्यकता है जिन्हें धोखे से, जोर जबरदस्ती से हमसे दूर कर दिया गया था। हमारा और जिनका रक्त, रूप, शक्ल, जीवन शैली, संस्कृति, इतिहास, पूर्वजों का मान सब एक है।

आइये आप में से कौन कौन इतिहास पुरुष बनने के लिए पुरुषार्थ करेगा और वीर सावरकर जी की अंतिम इच्छा शुद्धि और दलितोद्धार जीवन का उद्देश्य होना चाहिए को पूरा करेगा।

–डॉ. विवेक आर्य

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की ओर से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में
आर्य परिवार होली मगंल मिलन वीरवार 5 मार्च, 2015 सायं 3:30 से 7:15 बजे
स्थान : रघुमल आर्य कन्या सीनियर सैकेण्डरी स्कूल,
राजाबाजार, कनॉट प्लेस (स्टेट्स एम्पोरियम के पीछे), शिवाजी स्टेडियम के पास, नई दिल्ली–1
नवसस्येष्टि यज्ञ : 3:30 बजे, विशिष्ट संगीत एवं हास्य रंग की प्रस्तुति, बच्चो के सांस्कृति कार्यक्रम
पुष्पों द्वारा होली–मंगल मिलन एवं प्रीतिभोज : 7:15 बजे
होली मंगल मिलन के इस समारोह में आप परिवार इष्ट मित्रों सहित पधार कर
समारोह की सोभा को बढाऐं तथा अन्य आर्य परिवारों, जिन्हें आप जानते हैं आमंत्रित करें।
निवेदक : –
धर्मपाल आर्य, विद्यामित्र दुकराल, विनय आर्य, ओम प्रकाश आर्य, शिव कुमार मदान, मृदुला चौहान
प्रधान, कोषाध्यक्ष, महामन्त्री, उप प्रधान, उप प्रधान, उप प्रधान
9810061763, 9810072175, 9958174441

कर्मयोगी : चन्द्रभान जी

श्री चन्द्रभान चौधरी (80) का दशक पार कर जाने के बावजूद नवयुवकों की तरह समाजसेवा में सक्रिय हैं पुलिस उपायुक्त जैसे गरिमा पण्डित पद पर रह कर आप ने राष्ट्र की अविस्मरणीय सेवा की। राष्ट्रपति सम्मान से सम्मानित चौधरी साहब में अहं नाम की कोई चीज नहीं है। नवयुवकों के प्रेरणास्त्रोत श्री चन्द्रभान जी चौधरी गत अनेक वर्षों से दिल्ली में आर्यसमाज के अनेक संगठनों की सेवा कर रहे हैं। प्रातःकाल से रात्रि पर्यन्त संस्थाओं एवं असहायों के लिए न जाने कितने परिवारों में जाकर दान इकटठा करते हैं व जरुरतमेंदों की सेवा करते हैं। भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा को भी वह हर माह निरन्तर आर्थिक सहयोग प्रदान करते हैं। स जीव शरदः शतम्।

– हरबंसलाल कोहली (का. प्रधान)

फरवरी –2015 के आर्थिक सहयोगी

श्रीमती वासन्ती देवी चौधरी, अशोक विहार फेज–1, दिल्ली	वार्षिक सहयोग	6000/–
आर्य समाज करोल बाग, नई दिल्ली (छः माह के लिए)		3000/–
आर्य समाज इन्द्रा नगर, बगलौर (कर्नाटक)	मासिक	1500/–
आर्य समाज अनारकली, मन्दिर मार्ग नई दिल्ली	मासिक	1000/–
ब्रिगेडियर के.पी. गुप्ता जी, सैक्टर–15, फरीदाबाद	मासिक	1000/–
श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा जी, महामंत्री शुद्धि सभा	मासिक	500/–
श्रीमती स्वतन्त्रलता शर्मा जी, वसन्तनगर, बगलौर	मासिक	500/–
श्री लक्ष्मण देव छाबड़ा जी, मानसरोवर गार्डन, नई दिल्ली		500/–
आर्य समाज बिड़ला लाइन्स–कमला नगर, दिल्ली		500/–
आर्य समाज बसेड़ा जिला, सहारनपुर उ.प्र.		300/–
श्री रामकिशन आर्य जी, न्यू रोशनपुरा, नजफगढ़, नई दिल्ली		200/–
आर्य समाज कोटला मुबारकपुर, नई दिल्ली		200/–
श्री विजय गुप्त जी (आशु कवि) मदनगीर, नई दिल्ली		200/–
श्री तेज वीर सिंह जी, जैन पार्क, उत्तम नगर, नई दिल्ली		100/–
श्री रामचन्द्र आर्य फूला देवी, सनलाइट कालोनी, हरि नगर, नई दिल्ली		100/–
श्री सुदर्शन कपूर जी, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली		100/–
श्रीमती सरोज रस्तोगी जी, जंगपुरा, नई दिल्ली		100/–
वन्दना आर्या, मयूर विहार, दिल्ली		100/–
कु. आभा जी, अमर कालोनी, नई दिल्ली		100/–
श्री एस.एस. लोधी जी, ग्राम.पो. दौंका– बुलन्दशहर उ.प्र.		100/–

श्री चन्द्रभान चौधरी जी द्वारा एकत्रित दान

कुमारी गरिमा जी, ऐ.2 ब्लाक पश्चिम विहार, नई दिल्ली	मासिक	1000/–
श्रीमती चन्द्रकला राजपाल जी, पश्चिम विहार, नई दिल्ली	मासिक	500/–
श्री सुखदेव महाजन जी, विकासपुरी, नई दिल्ली		50/–
डा. पुष्पलता वर्मा जी, आर्य समाज विकासपुरी, नई दिल्ली		50/–
श्रीमती ऊषा कुकरेजा जी, आर्य समाज विकासपुरी, नई दिल्ली		50/–
श्रीमती संतोष कोछड़ जी, आर्य समाज विकासपुरी, नई दिल्ली		50/–

श्री देवराज अरोड़ा जी (फरीदाबाद) द्वारा एकत्रित त्रैमासिक दान राशि

श्री मदनलाल तनेजा जी, सैक्टर–16, फरीदाबाद	675/–
श्री देवराज अरोड़ा जी, सैक्टर–16, फरीदाबाद	325/–
श्री संजय अरोड़ा जी, सैक्टर–16, फरीदाबाद	250/–
श्री अजय अरोड़ा जी, सैक्टर–16, फरीदाबाद	250/–
श्री वेद प्रकाश जी, रोहिणी, नई दिल्ली	300/–
श्री विजय अरोड़ा जी, सैक्टर–16, फरीदाबाद	300/–
श्रीमती उर्मिल जी, कीर्ति नगर, नई दिल्ली	300/–
श्री मदन छाबड़ा जी, मालवीय नगर, दिल्ली नई	300/–
श्री सुभाष अरोड़ा जी, सैक्टर–16, फरीदाबाद	225/–
श्री अनिल गुप्ता जी, सैक्टर–16, फरीदाबाद	225/–
श्री कृष्ण लाल टुटेजा जी, सैक्टर–16 फरीदाबाद	150/–
श्री सुरेश जी, भारत ऑटटीकल्स, फरीदाबाद	150/–
श्री पवन अग्रवाल जी, सैक्टर–16, फरीदाबाद	150/–

आर्य केन्द्रीय सभा (दिल्ली राज्य) के तत्त्वावधान में नव सम्वत्सर 2072 के अवसर पर
141वाँ आर्यसमाज स्थापना दिवस समारोह
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा विक्रमी सम्वत् 2072, तद्नुसार शनिवार, 21 मार्च, 2015
स्थान – ओपन एयर थियेटर तालकटोरा पार्क, तालकटोरा स्टेडियम के पास नई दिल्ली–110001
आर्य समाज के कार्यों पर समायोजित प्रस्तुति.....सायं 4:00 से 6:00 बजे तक
विशेष उद्बोधन .....सायं 6:00 से 6:45 बजे तक
समारोह का सीधा प्रसारण टी.वी. चैनल पर एम.डी.एच. के सहयोग से किया जायेगा।
–: निवेदक :–
महाशय धर्मपाल, अरुण प्रकाश वर्मा, सुरेन्द्र कुमार रैली, राजीव आर्य
प्रधान, कोषाध्यक्ष, वरिष्ठ उपप्रधान, महामन्त्री 011–25937341, 9810086759, 9810855695, 9540029044

निःशुल्क ध्यान योग विज्ञान शिविर एवं बृहद्यज्ञ

दिनांक 23 मार्च से 29 मार्च 2015 तक
सानिध्य : पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी महाराज, मुख्याधिष्ठाता आत्म शुद्धि आश्रम बहादुरगढ़
यज्ञ ब्रह्मा : पूज्य स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी सरस्वती, संचालक गुरुकुल पूठ गाजियाबाद
ध्यान योग साधना : आचार्य राजहंस मैत्रेय
आसन, प्राणायाम प्रशिक्षण : योगनिष्ठ सत्यपाल जी वत्स आर्य
स्थान : आत्मशुद्धि आश्रम, (पंजीकृत न्यास) बहादुरगढ़ झज्जर, हरियाणा
दूरभाष : 01276 – 230195 चलभाष : 09416054195

thearyasamaj.org

R.N.I. No. 43084/76 Date of Publication 01-3-2015 Delhi Postal R.No. G-3/DL (N) 060/2015-17
Posting Date : 2-3 Every Month

सेवा में,

नुमान रोड़,

शुद्धि समाचार

मार्च – 2015

'होली आषाढ़ी–रबी फसल व ऋतु परिवर्तन के स्वागत का पर्व'

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

प्रत्येक वर्ष फाल्गुन महीने की पूर्णिमा को होली का पर्व देश भर में मनाया जाता है। पूर्णिमा के दिन लकड़ियों वा काष्ठ को इकट्ठा कर रात्रि में होली जलाई जाती है व उसके अगले दिन रंगों से होली खेली जाती है। यह पर्व कब आरम्भ हुआ इसका इतिहास में कहीं विवरण उपलब्ध नहीं है। इस कारण इस पर्व की प्राचीनता सिद्ध है। फाल्गुन मास की पूर्णिमा पर मनाये जाने के कारण इस पर्व का विशेष महत्व है। एक प्रमुख कारण यह है कि यह पर्व आषाढ़ी अथवा रबी की फसल से जुड़ा है। भारत का प्रमुख भोजनान्न गेहूं वा यव वा जौ है जो इस समय लगभग तैयार होकर नव–अन्न व शस्य के रूप में उपलब्ध होता है। सारे देश वा देशवासियों का पूरे वर्ष भर का जीवन इस अन्न व फसल पर निर्भर करता है। यदि अन्न न हो तो देश चल नहीं सकता। वायु व जल के बाद यदि संसार में सबसे उपयोगी कोई वस्तु है तो वह अन्न ही है। इसी लिए कहा गया है कि **'पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि अन्नं जल शुभाशितम्'** अर्थात् पृथिवी पर सबसे श्रेष्ठ तीन पदार्थ अन्न, जल व मधुर वाणी हैं। प्राण–वायु का समावेश भी इनमें मान लेना चाहिये। यह विदित ही है कि हमारे कृषक अपनी फसल की गुणवत्ता–वृद्धि एवं उसे प्रचुर मात्रा में उत्पन्न करने के लिए रात–दिन न केवल कड़ा परिश्रम करते हैं अपितु उसमें अच्छे व उत्कृश्ट बीजों के प्रयोग के साथ महंगी खाद का प्रयोग भी करते हैं। अतः यदि फसल आशानुरूप तैयार होती है तो कृषकों का प्रसन्न होना स्वाभाविक ही है और यदि फसल आशारुप न हो तो कृषकों का निराश होना भी स्वाभाविक ही है। अन्य देशों में भी नई फसल के तैयार होने पर उसके स्वागत में पर्व मनाये जाते हैं। ऋक्षराज रूस के हिमाच्छादित देश में फसल काटने पर कृषक अपने इष्ट मित्रों को पक्वान्न से परितृप्त करके उत्सव मनाते हैं। भुवन–भास्कर की भूमि जापान में भी जब धानों की फसल कटती है तब धान की सुरा और चावलों की रोटियों के सहभोज होते हैं और गानवाद्यपूर्वक पर्व मनाया जाता है। योरुप के सेन्ट वेलन्टाइन का दिन और इंग्लैण्ड में 'मे पोल' (May Pole) के उत्सव भी इसी प्रकार के होते हैं। वस्तुतः इस प्रकार के उत्सव ग्रामीण कृषक जनता में ही प्रचलित हैं।

अतः फसल के पक जाने से पूर्व ही नई फसल के स्वागत में होली का पर्व फाल्गुन मास की पूर्णिमा के दिन भारत में मनाया जाता आ रहा है। इस पर्व का नाम होली क्यों है?यह भी हम भूल चुके हैं। आषाढ़ी फसल के नवशस्यों को तिनकों की अग्नि में भूना जाता है। ऐसे अधपके शमीधान्य (फली वाले अन्न) को होलक वा होला कहते हैं। इन अधपके नवागत यवों के द्वारा अग्नि में यज्ञ वा होम करने के कारण इसे **'होलकोत्सव'** कहते हैं। अग्नि में होलकों की आहुति इस आशय से दी जाती है कि सभी देवताओं को यह नवान्न प्राप्त हो सके। वैदिक साहित्य में अग्नि एक देवता है और यह अन्य सभी देवताओं का मुख हैं। हमें जिन देवताओं को भी अपना कोई प्रिय खाद्य पदार्थ देना व समर्पित करना होता है, उसे अग्नि देवता को यज्ञ द्वारा अर्पित कर देते है। अग्नि में समर्पित पदार्थ अग्निदेवता अन्य सभी जड़–चेतन देवताओं को पहुंचा देते हैं और वह तृप्त हो जाते हैं। इसके बाद नवान्न को समाज के श्रेष्ठ विद्वानों जो सभी लोगों को विद्या व ज्ञान प्रदान करते हैं, क्षमा, त्याग की मूर्ति हैं व गुण, कर्म व स्वभाव के अनुसार ब्राह्मण हैं, उन्हें यह अन्न प्रस्तुत व भेंट किया जाता है। आजकल हमारे कृषक भाई वेद विद्या के शिक्षण केन्द्रों गुरूकुलों आदि में आषाढ़ी की फसल का अन्न पहुंचातें हैं। यह भी होली का ही एक भाग अथवा अंग है। इसके बाद कृषक उत्पादित अन्न का भोग स्वयं व अपने परिवार को करा सकते हैं, यह प्राचीन मर्यादा है जिसमें धर्म के गहन तत्व छिपे हैं। **इन होलों की यज्ञ में आहुति के कारण ही इस पर्व का नाम होली प्रचलित हो गया है।** कालान्तर में लोगों ने अनेकानेक राजसिक व तामसिक गुणों से प्रभावित आचरण यथा मदिरापान, अनेक अभद्र आचरण व व्यवहारों को भी इस पर्व के साथ जोड़ दिया है जिन्हें इस पर्व की विकृतियां ही माना जा सकता है। इन अभद्र आचरण व व्यवहारों का त्याग करना व शालीनता पूर्वक पर्व को मनाना ही सभ्यजनों का कर्तव्य है।

होली का पर्व के अवसर पर शिशिर ऋतु का प्रभाव समाप्त हो चुका होता है तथा वसन्त ऋतु पूर्ण यौवन पर होता है। अब सर्दियों में पहने जाने वाले ऊनी गरम वस्त्रों की आवश्यकता समाप्त हो गई है। वसन्त के अनुसार हल्के श्वेत वस्त्रों की आवश्यकता पड़नी है, अतः उनका प्रबन्ध कर उन्हें तैयार करना होता है। जो सर्दियों की ऋतु व्यतीत हो चुकी है वह मनुष्यों सहित हमारे पालतू गाय आदि पशुओं के लिए कठिनतर थी और जो अब विद्यमान है व आने वाली है वह शारीरिक सुखानुभूति की दृष्टि से अच्छी है, अत' इस ऋतु परिवर्तन का भी स्वागत उल्लास व प्रसन्न मन से किया जाता है।

मनुष्य को ईश्वर ने पांच ज्ञानेन्द्रियों व पांच कर्मेन्द्रियों से नवाजा है। आंखे ज्ञान इन्द्रिय हैं जो अच्छे सात्विक दृश्य को देखकर प्रसन्न होती हैं। प्रसन्नता का स्वास्थ्य से गहरा सम्बन्ध है। प्रसन्न व्यक्ति को रोग व दुख बहुत कम सताते हैं। इसी का प्रतीक वसन्त ऋतु भी है। सभी वृक्ष अपने पुराने पत्तों को छोड़कर नये पत्ते से मानों नया परिधान धारण कर श्रृगांर किये हुए इस पर्व को मनाते हुए प्रतीत होते हैं। इसी प्रकार से वनों में ओषधियां भी उत्पन्न हो गयी हैं जो रोगियों के लिए दुख निवारण व सुखों की प्राप्ति कराने वाली होती है। इस कार्य में संलग्न व इतर विवेकी पुरूष भी इस उपलब्धि पर प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। सभी फूलों के पौधें अपने पूर्व पत्तों को त्याग कर नये रंगीन व मनमोहन पुष्पों व पत्तों से वसन्त ऋतुराज का स्वागत करते हुए दिखते है। ऐसा लगता है कि प्रसन्नता से नाच रहे हैं। पुष्पों की अद्भुत सौन्दर्य व नाना रंगों को देख कर मनुष्य भी मन्त्रमुग्ध व रोमांचित होते है। इन रंग बिरंगे फूलों की ही तरह मनुष्य भी होली के पर्व पर नये–नये रंगों को एक दूसरे के चेहरे पर लगाकर व पुष्प–इत्र को जल में मिलाकर रंगीन जल को एक दूसरे पर डालकर उन्हें रंगीन कर देते हैं जिससे कुछ पलों के लिए प्रसन्नता का अनुभव होता है। यह एक प्रकार होली को सांकेतिक रूप से प्रकट करता है कि फूलों की भांति हमने भी वसन्त ऋतु का स्वागत किया है।

होली के अवसर पर सभी पशु अपनी पुरानी रोमावली को त्याग कर नई रोमावली को नये परिधान के रूप में धारण करते है अथवा प्रकृति व परमात्मा की ओर से उन्हें यंह नया परिधान प्राप्त होता है जिससे वह मन ही मन प्रसन्नवदन होकर होली मना रहे होते हैं। पक्षी समूह भी होली के पर्व के अवसर पर अपने पुराने **'पर व पंखों'** को झाड़कर नवीन पक्षावलि का परिच्छद पहनते हैं। यह भी उन्हें परमात्मा प्रदान करता है। इस प्रकार से न केवल मनुष्य अपितु समस्त पशु, पक्षी तथा वनस्पति जगत सहित समस्त प्राणीजगत होली का पर्व अपनी–अपनी प्रकार से मनातें हैं। होली प्रेम के प्रसार का भी पर्व है। इसे क्रियान्वित रूप देने के लिए इस दिन वैर–भाव को भूलकर लोग एक दूसरे के घर जाकर चेहरे पर रंग लगाकर व गले मिलकर सभी स्त्री व पुरूष एक दूसरे को शुभकामनायें व बधाई देकर इस प्रेम प्रसार को सुदृढ़ व व्यापक रूप देते हैं, यह इस पर्व का विशेष पक्ष है।

इस पर्व से जुड़ी राजा हिरण्यकशपू, उसकी बहन होलिका व पुत्र प्रहलाद् की पौराणिक कथा भी प्रचलित है। कथानुसार राजा हिरण्यकशपू को अभिमान हो गया और उसने ईश्वर की पूजा बन्द करवा दी और अपनी पूजा कराने लगा। उसका अपना ही पुत्र प्रह्लाद उसका विरोधी हो गया जिसे सजा देने के लिए राजा ने अपनी बहिन की सहायता ली। बहिन होलिका को यह वरदान मिला हुआ था कि अग्नि का उस पर कोई प्रभाव नहीं होगा। अतः राजा की आज्ञानुसार वह पुत्र प्रह्लाद को अपनी गोद में लेकर अग्नि पर बैठ गई। परिणाम यह हुआ कि होलिका जल कर नष्ट हो गई परन्तु सच्चे ईश्वर भक्त प्रह्लाद् पर अग्नि का कोई प्रभाव नहीं हुआ। यह कल्पित दृष्टान्त सच्ची ईश्वर की पूजा के महत्व को प्रतिपादित करता है। इस कथा को ही होली का पर्व मनाने में आधारभूत कारण बताया जाता है। विवेक बुद्धि से इसका उद्देश्य यह ज्ञात होता है कि अहंकार से सभी मनुष्यों को बचना चाहिये और सच्ची ईश्वर की पूजा करनी कर्तव्य भाव से यथासमय चाहिये। हमने होली के कई पक्षों पर विचार कर उसके कारणों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है। लेख की समाप्ति पर पं. श्री सिद्धगोपाल कविरत्न काव्यतीर्थ जी की निम्न कविता प्रभावपूर्ण कविता प्रस्तुत है:

ऋतुराज वसन्त विराज रहा,
मनभावन है छवि छाज रहा।
बन–बागन में कुसुमावलि की,
सुखदा सुशमा वह साज रहा।।
यव गेहुं चना सरसों अलसी,
सब ही पक आज अनाज रहा।
यह देख मनोहर दृश्य सभी,
अति हर्षित होय समाज रहा।।
उपलक्ष्य इसे करके जग में,
शुभ होलक–उत्सव हैं करते।
अधपक्व, यवाहुति दे करके,
सब व्योम सुगन्ध से हैं भरते।।
सब सज्जन–वृन्द अतः जग में,
नव सस्य–सुयज्ञ इसे कहते।
कुल–वैर विसार स्नेह–सने,
हुलसे सब आपस में मिलते।।
चर पान इलायचि भेंट करें,
निज मित्र–समादर हैं करते।
हृदयंगम गायन–वादन से,
मुद से सब हैं मन को भरते।।

फोनः 09412985121

मुद्रक, व प्रकाशक – रामनाथ सहगल द्वारा गुरमत प्रिटिंग प्रेस, 1337, संगतरासन, पहाड़ गंज, नई दिल्ली–55 दूरभाष : 23561625, से मुद्रित एवं भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, 6949, बिड़ला लाइन दिल्ली–7 दूरभाष : 23847244 से प्रकाशित। **सम्पादक : डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री**